बी० ए० I समाज शास्त्र

शिक्षा (EDUCATION)

मानव की प्रत्येक पीढ़ी में सीखने की प्रक्रिया कि सहायता से हस्तान्तरण द्वारा ज्ञान की वृद्धि होती गयी। ज्ञान की यह परम्परात्मक ही शिक्षा है। शिक्षा ने ही मानव को पशु-स्तर से ऊँचा उठाया है।

संकीर्ण अर्थ में शिक्षा का तात्पर्य पुस्तकीय ज्ञान और लिखने पढ़ने से लिया जाता है

परिभाषा

वेगार्डस के अनुसार — शिक्षा को सांस्कृतिक विरासत के हस्तान्तरण के रूप में परिभाषित करते हुए - "सांस्कृतिक विरासत एवं जीवन के अर्थ को प्राप्त करना ही शिक्षा है।"

महात्मा गाँधी के अनुसार — "शिक्षा से मेरा अभिप्राय बच्चे के शरीर, मन और आत्मा में विद्यमान सर्वोत्तम गुणों का सर्वांगीण विकास करना है।"

प्रो० पेस्टालॉजी के अनुसार — "शिक्षा मनुष्य की समस्त सहज शक्तियों का स्वाभाविक सामंजस्ययुक्त और प्रगतिशील विकास है।"

टी० रेमण्ट के अनुसार — शिक्षा विकास की वह क्रिया है जिसके अनुसार मनुष्य बचपन से प्रौढ़ावस्था तक अनेक तरीकों से अपने भौतिक सामाजिक और आध्यात्मिक पर्यावरण के अनुकूलन करना सीखता है।

उपरोक्त सभी परिभाषाओं से स्पष्ट है कि शिक्षा एक ऐसी संस्था है। जिसका उद्देश्य बालक में मानसिक, आध्यात्मिक सामाजिक एंव भौतिक गुणों का विकास करना है। जिससे की वह सम्पूर्ण पर्यावरण के साथ सफल अनुकूलन कर सके।

शिक्षा के उद्देश्य -
(Objectives of Education)

गिलिन एंव गिलिन ने शिक्षा के निम्नांकित उद्देश्य ~~बताइए~~ बताए है -

(1) भाषा के लिखने बोलने एंव व्याकरण तथा गणित का ज्ञान प्रदान करना।
(2) जटिल संस्कृति को समझने के लिए ज्ञान प्रदान करना।
(3) बच्चे में सामाजिक अनुकूलन की क्षमता पैदा करना।
(4) आर्थिक अनुकूलन के लिए प्रशिक्षण देना।
(5) संस्कृति में सुधार एंव वृद्धि में योग देना।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया